

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्



गायत्री ही कामधेनु है !



● श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री ही कामधेनु है



लेखक :

श्रीराम शर्मा आचार्य



प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००



पुरावृत्ति सन्- २०१४

मूल्य : ९) रुपए

भूमिका

गायत्री-उपासना में हमारे जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत हुआ है। अपने साधना काल में हमने लगभग २००० आर्ष ग्रंथों का अध्ययन करके गायत्री संबंधी बहुत ही बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की है। स्वयं २४-२४ लक्ष के २४ पुरश्चरण किए हैं और देशभर के गुप्त-प्रकट गायत्री उपासकों से संबंध स्थापित करके उनके बहुमूल्य सहयोग, अनुभव तथा आशीर्वाद का संग्रह किया है। इस मार्ग पर चलते हुए हमें जो अनुभव प्राप्त हुए हैं, वे इतने महत्त्वपूर्ण एवं आश्चर्यजनक हैं कि गायत्री की महिमा के संबंध में किसी भी प्रकार का संदेह नहीं रह जाता है। गायत्री को अमृत, पारस और कल्पवृक्ष कहा गया है। इससे बढ़कर श्री, समृद्धि, सफलता और सुख-शांति का दूसरा मार्ग नहीं है।

गायत्री उपासकों को माता का आँचल पकड़ने से जो अनुभव हुए हैं, उनका कुछ का संक्षिप्त वृत्तांत इस पुस्तक में दिया जा रहा है। इससे असंख्यों गुने महत्त्वपूर्ण अनुभव तो अभी अप्रकाशित ही हैं। इतना निश्चित है कि कभी किसी की गायत्री-साधना निष्फल नहीं जाती। इस दिशा में बढ़ाया हुआ प्रत्येक कदम कल्याणकारक ही होता है।

गायत्री उपासना कैसे करनी चाहिए? किस-किस कार्य के लिए गायत्री महाशक्ति का उपयोग किस प्रकार, किस विधि-विधान से होना चाहिए, इसका विस्तृत वर्णन हमने गायत्री महाविज्ञान ग्रंथ के चारों खंडों में भली प्रकार कर दिया है। पाठक उनसे सहायता लेकर आशाजनक लाभ उठा सकते हैं।

— श्रीराम शर्मा आचार्य

महापुरुषों द्वारा गायत्री-महिमा का गान

हिंदू धर्म में अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। विविध सिद्धांतों के संबंध में परस्पर विरोधी मतभेद भी हैं, पर गायत्री मंत्र की महिमा एक ऐसा तत्त्व है, जिसे सभी शास्त्रों ने, सभी संप्रदायों ने, सभी ऋषियों ने एक स्वर से स्वीकार किया है।

अथर्ववेद—“१९-७१-१ में गायत्री की स्तुति की गई है जिसमें उसे आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली कहा गया है।”

विश्वामित्र का कथन है—“गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मंत्र नहीं है। संपूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप गायत्री मंत्र की एक कला के समान भी नहीं हैं।”

भगवान मनु का कथन है—“ब्रह्माजी ने तीनों वेदों का सार तीन चरण वाला गायत्री मंत्र निकाला।” गायत्री से बढ़कर पवित्र करने वाला और कोई मंत्र नहीं है। जो मनुष्य नियमित रूप से तीन वर्ष तक गायत्री का जप करता है, वह ईश्वर को प्राप्त करता है। जो द्विज दोनों संध्याओं में गायत्री जपता है, वह वेद पढ़ने के फल को प्राप्त करता है। अन्य कोई साधना करे या न करे केवल गायत्री जप से ही सिद्धि पा सकता है। नित्य एक हजार जप करने वाला पापों से वैसे ही छूट जाता है जैसे केंचुली से सर्प छूट जाता है। जो द्विज गायत्री की उपासना नहीं करता, वह निंदा का पात्र है।

योगिराज याज्ञवल्क्य कहते हैं—“गायत्री और समस्त वेदों को तराजू में तौला गया। एक ओर षट्अंगों सहित वेद और दूसरी ओर

गायत्री को रखा गया। वेदों का सार उपनिषद् हैं, उपनिषद् का सार व्याहृतियों समेत गायत्री है। गायत्री वेदों की जननी है, पापों का नाश करने वाली है, इससे अधिक पवित्र करने वाला अन्य कोई मंत्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नहीं है। गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, केशव से श्रेष्ठ कोई देव नहीं, गायत्री से श्रेष्ठ कोई मंत्र न हुआ न आगे होगा। गायत्री जान लेने वाला समस्त विद्याओं का वेत्ता और श्रेष्ठ श्रोत्रिय हो जाता है। जो द्विज गायत्रीपरायण नहीं, वह वेदों का पारंगत होते हुए भी शूद्र के समान है, अन्यत्र किया हुआ उसका श्रम व्यर्थ है। जो गायत्री नहीं जानता ऐसा व्यक्ति ब्राह्मणत्व से च्युत और पापयुक्त हो जाता है।”

पराशर जी कहते हैं—“समस्त जप सूक्तों तथा वेद-मंत्रों में गायत्री मंत्र परम श्रेष्ठ है। वेद और गायत्री की तुलना में गायत्री का पलड़ा भारी है। भक्तिपूर्वक गायत्री जपने वाला परममुक्त होकर पवित्र बन जाता है। वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास पढ़ लेने पर भी जो गायत्री से हीन है, उसे ब्राह्मण न समझना चाहिए।”

शंख ऋषि का मत है—“नरकरूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री ही है। उससे उत्तम वस्तु स्वर्ग और पृथ्वी पर कोई नहीं है। गायत्री का ज्ञाता निस्संदेह स्वर्ग को प्राप्त करता है।”

शोनिन ऋषि का मत है—“अन्य उपासनाएँ करे चाहे न करे, केवल गायत्री जप से द्विज जीवनमुक्त हो जाता है। सांसारिक और पारलौकिक समस्त सुखों को पाता है। संकट के समय दस हजार जप करने से विपत्ति का निवारण होता है।”

अत्रि ऋषि कहते हैं—“गायत्री आत्मा का परम शोधन करने वाली है। उसके प्रभाव से कठिन दोष और दुर्गुणों का परिमार्जन हो जाता है। जो मनुष्य गायत्रीतत्त्व को भली प्रकार समझ लेता है उसके लिए संसार में कोई सुख शेष नहीं रह जाता।”

महर्षि व्यासजी कहते हैं—“जिस प्रकार पुष्पों का सार शहद,

दूध का सार घृत है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है। सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान है। गंगा शरीर के पापों को निर्मल करती है, गायत्रीरूपी ब्रह्मगंगा से आत्मा पवित्र होती है। जो गायत्री को छोड़कर अन्य उपासनाएँ करता है, वह पकवान्न छोड़कर भिक्षा माँगने वाले के समान मूर्ख है। काम्य सफलता तथा तप सिद्धि के लिए गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है।”

भरद्वाज ऋषि कहते हैं—“ब्रह्मा आदि देवता भी गायत्री का जप करते हैं, वह ब्रह्म साक्षात्कार कराने वाली है। अनुचित काम करने वालों के दुर्गुण गायत्री के कारण छूट जाते हैं। गायत्री से रहित व्यक्ति शूद्र से भी अपवित्र हैं।”

चरक ऋषि कहते हैं—“जो ब्रह्मचर्यपूर्वक गायत्री की उपासना करता है और आँवले के ताजे फलों का सेवन करता है, वह दीर्घजीवी होता है।”

नारदजी की उक्ति है—“गायत्री भक्ति का ही रूप है, जहाँ भक्तिरूपी गायत्री है, वहाँ श्रीनारायण जी का निवास होने में कोई संदेह नहीं करना चाहिए।”

वसिष्ठ जी का मत है—“मंदगति, कुमार्गगामी और अस्थिर मति भी गायत्री के प्रभाव से उच्च पद को प्राप्त करते हैं फिर सद्गति होना निश्चित है। जो पवित्रता और स्थिरतापूर्वक गायत्री की उपासना करते हैं, वे आत्मलाभ करते हैं।”

गौतम ऋषि का मत है—“योग का मूल आधार गायत्री है। गायत्री से ही संपूर्ण योगों की साधना होती है।”

महर्षि उद्दालक कहते हैं—“गायत्री में परमात्मा का प्रचंड तेज भरा हुआ है। जो इस तेज को धारण करता है, उसका वैभव अतुलनीय हो जाता है।”

देवगुरु बृहस्पतिजी का मत है—“देवत्व और अमृततत्त्व की आदिजननी गायत्री है। इसे प्राप्त करने के पश्चात और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता।”

शृंगी ऋषि की उक्ति है—“ज्ञान-विज्ञान का आदि स्रोत गायत्री है। जो इसमें है उससे अधिक संसार में और कुछ नहीं है।”

उपर्युक्त अभिमतों से मिलते-जुलते अभिमत प्रायः सभी ऋषियों के हैं। इससे स्पष्ट है कि कोई भी ऋषि अन्य विषयों में चाहे आपस का मतभेद रखते रहे हों, पर गायत्री के बारे में उन सब में समान श्रद्धा थी और वे सभी अपनी उपासना में उसका प्रथम स्थान रखते थे। शास्त्रों में, धर्मग्रंथों में, स्मृतियों में, पुराणों में गायत्री की महिमा तथा साधना पर प्रकाश डालने वाले सहस्रों श्लोक भरे पड़े हैं। इस सबका संग्रह किया जाए, तो एक बड़ा भारी गायत्री पुराण ही बन सकता है।

वर्तमान शताब्दी के आध्यात्मिक तथा दार्शनिक महापुरुषों ने भी गायत्री के महत्त्व को उसी प्रकार स्वीकार किया है जैसा कि प्राचीनकाल के तत्त्वदर्शी ऋषियों ने किया था। आज का युग बुद्धि और तर्क का, प्रत्यक्षवाद का युग है। इस शताब्दी के प्रभावशाली गणमान्य व्यक्तियों की विचारधारा केवल धर्मग्रंथों या परंपराओं पर आधारित नहीं रही है। उन्होंने बुद्धिवाद, तर्कवाद और प्रत्यक्षवाद को अपने विचार और कार्यों में प्रधान स्थान दिया है। ऐसे महापुरुषों को भी गायत्रीतत्त्व सब दृष्टिकोण से परखने पर खरा सोना प्रतीत हुआ है। नीचे उनमें से कुछ के विचार देखिए—

महात्मा गांधी कहते हैं—“गायत्री मंत्र का निरंतर जप रोगियों को अच्छा करने और आत्माओं की उन्नति के लिए उपयोगी है। गायत्री का स्थिर चित्त और शांत हृदय से किया हुआ जप आपत्तिकाल के संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है।”

लोकमान्य तिलक कहते हैं—“जिस बहुमुखी दासता के बंधनों में भारतीय प्रजा जकड़ी हुई है उसका अंत राजनीतिक संघर्ष करने मात्र से न हो जाएगा। उसके लिए आत्मा के अंदर प्रकाश उत्पन्न होना चाहिए, जिससे सत् और असत् का विवेक हो, कुमार्ग को

छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले। गायत्री मंत्र में यही भावना विद्यमान है।”

महामना मदनमोहन मालवीय जी ने कहा था—“ऋषियों ने जो अमूल्य रत्न हमें दिए हैं, उनमें से एक अनुपम रत्न गायत्री से बुद्धि पवित्र होती है। ईश्वर का प्रकाश आत्मा में आता है। इस प्रकाश से असंख्य आत्माओं को भव-बंधनों से त्राण मिला है। गायत्री में ईश्वरपरायणता में श्रद्धा उत्पन्न करने की शक्ति है। साथ ही वह भौतिक अभावों को दूर करती है। गायत्री की उपासना करना ब्राह्मणों के लिए अत्यंत आवश्यक है। जो ब्राह्मण गायत्री जप नहीं करता, वह अपने कर्तव्य धर्म छोड़ने का अपराधी होता है।”

रवीन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं—“भारतवर्ष को जगाने वाला जो मंत्र है, वह इतना सरल है कि एक ही श्वास में उसका उच्चारण किया जा सकता है। वह है—गायत्री मंत्र। इस पुनीत मंत्र का अभ्यास करने में किसी प्रकार के तार्किक ऊहापोह, किसी प्रकार के मतभेद अथवा किसी प्रकार के बखेड़े की गुंजाइश नहीं है।”

योगी अरविंद घोष ने कई जगह गायत्री जप करने का निर्देश किया है। उन्होंने बताया है कि गायत्री में ऐसी शक्ति सन्निहित है जो महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। उन्होंने कइयों को साधना के तौर पर गायत्री का जप बताया है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस का उपदेश है—“मैं लोगों से कहता हूँ कि लंबे-लंबे साधन करने की उतनी जरूरत नहीं है। इस छोटी-सी गायत्री की साधना करके देखो। गायत्री का जप करने से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ मिल जाती हैं। यह मंत्र छोटा है, पर इसकी शक्ति भारी है।”

स्वामी विवेकानंद का कथन है—“राजा से वही वस्तु माँगी जानी चाहिए, जो उसके गौरव के अनुकूल हो। परमात्मा से माँगने योग्य वस्तु सद्बुद्धि है। जिस पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं, उसे सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। सद्बुद्धि से सत् मार्ग पर प्रगति होती

है और सत् कर्म से सब प्रकार के सुख मिलते हैं। जो सत् की ओर बढ़ रहा है, उसे किसी प्रकार के भय की कमी नहीं रहती। गायत्री सद्बुद्धि का मंत्र है। इसलिए उसे मंत्रों का मुकुटमणि कहा गया है।”

जगद्गुरु शंकराचार्य जी का कथन है—“गायत्री की महिमा का वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। बुद्धि का शुद्ध होना इतना बड़ा कार्य है, जिसकी समता संसार के और किसी काम से नहीं हो सकती। आत्मबल प्राप्त करने की दिव्यदृष्टि शुद्ध बुद्धि से प्राप्त होती है। उसका प्रेरक गायत्री मंत्र है। उसका अवतार दुरितों को नष्ट करने और ऋतु के अभिवर्द्धन के लिए हुआ है।”

स्वामी रामतीर्थ ने कहा है—“राम को प्राप्त करना सबसे बड़ा काम है, गायत्री की अभिप्राय बुद्धि को कामरुचि से हटाकर राम-रुचि में लगा देना है। जिसकी बुद्धि पवित्र होगी वही राम को प्राप्त करने का काम कर सकेगा। गायत्री पुकारती है कि बुद्धि में इतनी पवित्रता होनी चाहिए कि वह काम को राम से बढ़कर न समझे।”

महर्षि रमण का उपदेश है—“योगविद्या के अंतर्गत मंत्रविद्या बड़ी प्रबल है, मंत्रों की शक्ति से अद्भुत सफलताएँ मिलती हैं। गायत्री मंत्र ही है जिससे आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार के लाभ मिलते हैं।”

स्वामी शिवानंद जी कहते हैं—“ब्राह्ममुहूर्त में गायत्री का जप करने से चित्त शुद्ध होता है और हृदय में निर्मलता आती है। शरीर नीरोग रहता है, स्वभाव में नम्रता आती है, बुद्धि सूक्ष्म होने से दूरदर्शिता बढ़ती है और स्मरण शक्ति का विकास होता है। कठिन प्रसंगों में गायत्री द्वारा दैवी सहायता मिलती है। उसके द्वारा आत्म-दर्शन हो सकता है।”

काली कमली वाले बाबा विशुद्धानंद जी कहते थे—“गायत्री ने बहुतों को सुमार्ग पर लगाया है। कुमार्गगामी मनुष्य की पहले तो गायत्री की ओर रुचि ही नहीं होती, यदि ईश्वर कृपा से हो भी जाए

तो वह कुमार्गगामी नहीं रहता। गायत्री जिसके हृदय में वास करती है, उसका मन ईश्वर की ओर जाता है। विषय-विकारों की व्यर्थता उसे भली प्रकार अनुभव होने लगती है। कई महात्मा गायत्री का जप करके परम सिद्ध हुए हैं। परमात्मा की शक्ति ही गायत्री है। जो गायत्री के निकट जाता है, वह शुद्ध होकर रहता है। आत्मकल्याण के लिए मन की शुद्धि आवश्यक है। मन की शुद्धि के लिए गायत्री मंत्र अद्भुत है। ईश्वरप्राप्ति के लिए गायत्री जप को प्रथम सीढ़ी समझना चाहिए।”

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध आत्मज्ञानी टी. सुव्वाराम कहते हैं—
 “सविता नारायण की देवी प्रकृति को सावित्री कहते हैं। आदि-शक्ति होने के कारण इसको गायत्री कहते हैं। गीता में वर्णन ‘आदित्य वर्ण’ कहकर किया गया है। गायत्री की उपासना करना योग का सबसे प्रथम अंग है।”

श्री स्वामी करपात्री जी का कथन है—“जो गायत्री के अधिकारी हैं, उन्हें नित्य-नियमित रूप से उसका जप करना चाहिए। द्विजों के लिए गायत्री का जप एक अत्यंत आवश्यक धर्मकृत्य है।”

गीताधर्म के व्याख्याता श्री स्वामी विद्यानंद जी कहते हैं—
 “गायत्री बुद्धि को पवित्र करती है। बुद्धि की पवित्रता से बढ़कर जीवन में और दूसरा लाभ नहीं है। इसलिए गायत्री एक बहुत बड़े लाभ की जननी है।”

सर राधाकृष्णन कहते हैं—“यदि हम इस सार्वभौमिक प्रार्थना गायत्री पर विचार करें, तो हमें मालूम होगा कि यह हमें वास्तव में कितना ठोस लाभ देती है। गायत्री हम में फिर से जीवन का स्रोत उत्पन्न करने वाली आकुल प्रार्थना है।”

प्रसिद्ध आर्यसमाजी महात्मा सर्वदानंद जी का कथन है—
 “गायत्री मंत्र द्वारा प्रभु का पूजन सदा से आर्यों की रीति रही है। ऋषि दयानंद ने भी उसी शैली का अनुसरण करके संध्या का विधान तथा वेदों के स्वाध्याय का प्रयत्न करना बताया है। ऐसा

करने से अंतःकरण की शुद्धि तथा बुद्धि निर्मल होकर मनुष्य का जीवन अपने तथा दूसरों के लिए हितकर हो जाता है। जितना भी इस शुभ कर्म में श्रद्धा और विश्वास हो उतना ही अविद्या आदि क्लेशों का हास होता है। जो जिज्ञासु गायत्री मंत्र को प्रेम और नियमपूर्वक उच्चारण करते हैं, उनके लिए यह संसार-सागर में तरने की नाव और आत्मप्राप्ति की सड़क है।''

आर्य समाज के जन्मदाता श्री स्वामी दयानंद जी गायत्री के श्रद्धालु उपासक थे। ग्वालियर के राजासाहब से स्वामी जी ने कहा था कि भागवत सप्ताह की अपेक्षा गायत्री पुरश्चरण अधिक श्रेष्ठ है। जयपुर के सच्चिदानंद, हीरालाल रावल, घोड़लसिंह आदि को गायत्री जप की विधि सिखाई थी। मुलतान में उपदेश के समय स्वामी जी ने गायत्री मंत्र का उच्चारण किया और कहा कि यह मंत्र सबसे श्रेष्ठ है। चारों वेदों का मूल यही गुरुमंत्र है।

इस प्रकार वर्तमान शताब्दी के अनेक गणमान्य बुद्धिवादी महापुरुषों के अभिमत हमारे पास संग्रहीत हैं। उन पर विचार करने से इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि गायत्री उपासना कोई अंधविश्वासजन्य परंपरा नहीं है, वरन् उसके पीछे आत्मोन्नति करने वाले ठोस तत्त्वों का बल है। इस महान शक्ति को अपनाने का जिसने भी प्रयत्न किया है, उसे लाभ ही मिला है। गायत्री-साधना कभी भी निष्फल नहीं जाती।

गायत्री भूलोक की कामधेनु है। यह आत्मा की समस्त क्षुधा-पिपासाओं को शांत करती है। भव-बंधनों के जन्म-मृत्यु के चक्र से छुड़ाने की सामर्थ्य के परिपूर्ण होने के कारण उसे अमृत भी कहते हैं। गायत्री को स्पर्श करने वाला कुछ-से-कुछ हो जाता है, इसलिए उसे पारसमणि भी कहा गया है। चाहे कोई गृहस्थ हो या विरक्त, गायत्री उपासना सबके लिए समान रूप से लाभदायक है। गायत्री उपासना प्रत्येक द्विज का अनिवार्य धार्मिक कृत्य है। उसकी उपेक्षा करना अपने परम पुनीत धार्मिक कर्तव्य से च्युत होना है।

अभाव, कष्ट, विपत्ति, चिंता एवं निराशा की घड़ियों में गायत्री का आश्रय लेने से तुरंत शांति मिलती है। माता की कृपा प्राप्त होने से पर्वत के समान दीखने वाले संकट राई के समान हलके हो जाते हैं और अंधकार में भी आशा की किरणें प्रकाशवान होती हैं। गायत्री को सर्वशक्ति, सर्वसिद्धिदायिनी और सर्व कष्ट विनाशिनी कहा गया है।



गायत्री-साधना से सतोगुणी सिद्धियाँ

प्राचीन इतिहास पुराणों से पता चलता है कि पूर्व युगों में प्रायः सभी ऋषि-महर्षि गायत्री के आधार पर योग-साधना तथा तपश्चर्या करते थे। वसिष्ठ, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विश्वामित्र, व्यास, शुकदेव, दधीचि, वाल्मीकि, च्यवन, शंख, लोमस, तैत्रेय, जाबालि, उद्दालक, वैशम्पायन, दुर्वासा, परशुराम, पुलस्त्य, दत्तात्रेय, अगस्त्य, सनत्कुमार, कण्व, शौनिक आदि ऋषियों के जीवन वृत्तांतों से स्पष्ट है कि उनकी महान सफलताओं का मूल हेतु गायत्री ही थी।

थोड़े ही समय पूर्व अनेक ऐसे महात्मा हुए हैं जिनने गायत्री का आश्रय लेकर अपने आत्मबल एवं ब्रह्मतेज को प्रकाशवान किया था। उनके इष्टदेव, आदर्श, सिद्धांत भिन्न भले ही रहे हों, पर वेदमाता के प्रति सभी की अनन्य श्रद्धा थी। उन्होंने प्रारंभिक कुच-पान इसी महाशक्ति का किया था, जिससे वे इतने प्रतिभासंपन्न महापुरुष बन सके।

शंकराचार्य, समर्थ गुरु रामदास, नरसी मेहता, दादूदयाल, संत ज्ञानेश्वर, स्वामी रामानंद, गोरखनाथ, मछींद्रनाथ, हरिदास, तुलसीदास, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, रामतीर्थ, योगी अरविंद, महर्षि रमण, गौरांग महाप्रभु, स्वामी दयानंद, महात्मा एकरसानंद आदि अनेक महात्माओं का विकास गायत्री महाशक्ति के अंचल में ही हुआ था।

गायत्री ही कामधेनु है / १२

आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध ग्रंथ माधव-निदान के निर्माता श्रीमाधवाचार्य ने आरंभ में १३ वर्षों तक वृंदावन में रहकर गायत्री पुरश्चरण किए थे। जब उन्हें कुछ भी सफलता न मिली तो वे निराश होकर काशी चले गए और एक अवधूत की सलाह से भैरव की तांत्रिक उपासना करने लगे। कुछ दिन में भैरव प्रसन्न हुए और पीठ पीछे से कहने लगे कि 'वर माँग' माधवाचार्य जी ने उनसे कहा—“आप सामने आइए और दर्शन दीजिए” भैरव ने उत्तर दिया—“मैं गायत्री उपासक के सम्मुख नहीं आ सकता।” इस बात पर माधवाचार्य जी को बड़ा आश्चर्य हुआ उनने कहा यदि गायत्री उपासक के सामने आप प्रकट तक नहीं हो सकते, तो मुझे वरदान क्या देंगे? कृपया अब आप केवल यह बता दीजिए कि मेरी अब तक की गायत्री-साधना क्यों निष्फल हुई? भैरव ने उत्तर दिया—“तुम्हारे पूर्व जन्म के पाप नाश करने में अब तक की साधना लग गई। अब तुम्हारी आत्मा निष्पाप हो गई है। आगे जो साधना करोगे सफल होगी।” यह सुनकर माधवाचार्य जी फिर वृंदावन आए और पुनः गायत्री तपस्या आरंभ कर दी। अंत में माता के दर्शन हुए और पूर्ण सिद्धि प्राप्त हुई।

श्री महात्मा देवगिरि जी के गुरु हिमालय की एक गुफा में गायत्री द्वारा तप करते थे। उनकी आयु ४०० वर्ष से अधिक थी। वे अपने आसन से उठकर भोजन, शयन, स्नान या मल-मूत्र त्यागने तक को कहीं नहीं जाते थे। इन कामों की उन्हें आवश्यकता भी नहीं पड़ती थी।

नगराई के पास रामटेकरी के घने जंगल में एक हरीहर नामक महात्मा ने गायत्री तप करके सिद्धि पाई थी। महात्मा जी की कुटी के पास जाने में सात कोस का घना जंगल पड़ता था। उसमें सैकड़ों सिंह, व्याघ्र रहते थे। कोई व्यक्ति महात्मा जी के दर्शनों को जाता तो उसे दो या चार सिंह-व्याघ्रों से भेंट अवश्य होती। “मैं हरीहर बाबा

के दर्शन को जा रहा हूँ।" इतना कह देने मात्र से हिंसक पशु रास्ता छोड़कर चले जाते थे।

लक्ष्मण गढ़ में एक विश्वनाथ गोस्वामी नामक प्रसिद्ध गायत्री उपासक हुए हैं। उनके जीवन का अधिकांश भाग गायत्री उपासना में ही व्यतीत हुआ था। उनके आशीर्वाद से सीकर के एक वीदावत का परिवार गरीबी से छुटकारा पाकर बड़ा ही समृद्धिशाली एवं संपन्न बना। इस परिवार के लोग अब तक उन पंडितजी की समाधि पर अपने बच्चों का मुंडन कराते हैं।

जयपुर रियासत में जौन नामक गाँव में पं० हरराय नाम के एक नैष्ठिक गायत्री उपासक रहते थे। उनको अपनी मृत्यु का पहले से ही पता चल गया था। उनने सब परिजनों को बुलाकर धार्मिक उपदेश दिए और बोलते, बात-चीत करते गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए प्राण त्याग कर दिए।

जूनागढ़ के एक विद्वान पंडित मणिशंकर भट्ट पहले यजमानों के लिए गायत्री अनुष्ठान दक्षिणा लेकर करते थे। जब उनने अनेकों को इससे भारी लाभ होते देखे, तो उन्होंने अपना सारा जीवन गायत्री उपासना में लगा दिया। दूसरों के अनुष्ठान छोड़ दिए। उनका शेष जीवन बहुत ही सुख-शांति से बीता।

जयपुर प्रांत के बृढ़ा देवल ग्राम में विष्णुदत्त जी का जन्म हुआ। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहे। उनने पुष्कर में एक कुटी बनाकर गायत्री की घोर तपस्या की थी, फलस्वरूप उन्हें अनेक सिद्धियाँ प्राप्त हो गई थीं। बड़े-बड़े राजा उनकी कुटी की धूल को मस्तक पर रखने लगे। जयपुर और जोधपुर के महाराज अनेक बार कुटी पर उपस्थित हुए। महाराज उदयपुर तो अत्यंत आग्रह करके उन्हें अपनी राजधानी में ले आए और उनके पुरश्चरण की शाही तैयारी के साथ अपने यहाँ पूर्णाहुति कराई। इन ब्रह्मचारी जी के संबंध में अनेक चमत्कारी कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

खतौली से ७ मील दूर धौकलेश्वर में मगनानंद नामक एक गायत्री सिद्ध महापुरुष रहते थे। उनके आशीर्वाद से खतौली के ठिकानेदार को उनकी छिनी हुई जागीर पोलिटिकल एजेंट ने वापस की थी।

अलवर राज्य के अंतर्गत एक ग्राम के सामान्य परिवार में पैदा हुए एक सज्जन को किसी कारणवश वैराग्य हो गया। वे मथुरा आए और एक टीले पर रहकर गायत्री-साधना करने लगे। एक करोड़ गायत्री का जप करने के अनंतर उन्हें गायत्री का साक्षात्कार हुआ और वे सिद्ध हो गए। वह स्थान गायत्री टीले के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ एक छोटा-सा मंदिर है जिसमें गायत्री की सुंदर मूर्ति स्थापित है। उनका नाम बूटी सिद्ध था। सदा मौन रहते थे। उनके आशीर्वाद से अनेकों का कल्याण हुआ। धौलपुर और अलवर के राजा उनके प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे।

आर्यसमाज के संस्थापक श्री स्वामी दयानंदजी के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानंद सरस्वती ने बड़ी तपश्चर्यापूर्वक गंगा तीर पर रहकर तीन वर्ष तक गायत्री जप किया था। इस अंधे संन्यासी ने अपने तपोबल से अगाध विद्या, बल और अलौकिक ब्रह्मतेज प्राप्त किया था।

मांधाता ओंकारेश्वर मंदिर के पीछे गुफा में एक महात्मा गायत्री तप करते थे। मृत्यु के समय उनके परिवार के व्यक्ति उपस्थित थे। परिवार के एक बालक ने प्रार्थना की कि—“मेरी बुद्धि मंद है मुझे विद्या नहीं आती, कुछ आशीर्वाद दे जाइए, जिससे मेरा दोष दूर हो जाए।” महात्माजी ने बालक को समीप बुलाकर उसकी जीभ पर कमंडल में से थोड़ा-सा जल डाला और आशीर्वाद दिया कि तू ! पूर्ण विद्वान हो जाएगा। आगे चलकर वह बालक असाधारण प्रतिभाशाली विद्वान हुआ। इंदौर में ओंकार जोशी के नाम से प्रसिद्धि पाई। इंदौर नरेश उनसे इतने प्रभावित थे कि सबेरे घूमने जाते समय उनके घर से उन्हें साथ ले जाते थे।

चांदेड़ क्षेत्र निवासी गुप्त योगेश्वर श्री उद्धड़जी जोशी एक सिद्धपुरुष हो गए हैं। गायत्री उपासना के फलस्वरूप उनकी कुंडलिनी शक्ति जाग्रत हुई और वे परमसिद्ध बन गए। उनकी कृपा से कई मनुष्यों के प्राण बचे थे, कई को धन प्राप्त हुआ था, कई आपत्तियों से छूटे थे, उनकी भविष्यवाणियाँ सदा सत्य होती थीं। एक व्यक्ति ने उनकी परीक्षा करने तथा उपहास करने का दुस्साहस किया था, तो वह कोढ़ी हो गया।

बड़ौदा के मंजुसर निवासी श्री मुकटरामजी महाराज गायत्री उपासना में परमसिद्धि प्राप्त कर गए हैं। प्रायः आधे घंटे नित्य जप करते थे। उन्हें अनेक सिद्धियाँ प्राप्त थीं, दूर देशों के समाचार वे ऐसे सच्चे बताते थे मानो सब हाल आँखों देख रहे हों। पीछे परीक्षा करने पर वे समाचार सोलहों आने सच निकलते थे। उन्होंने गुजराती की दो किताबें पढ़ने तक की स्कूली शिक्षा पाई थी, पर संसार की सभी भाषाओं को भली प्रकार बोल और समझ लेते थे। विदेशी लोग उनके पास आकर अपनी भाषा में घंटों तक वार्तालाप करते थे। योग, ज्योतिष, वैद्यक, तंत्र तथा धर्मशास्त्र का उन्हें पूरा-पूरा ज्ञान था। बड़े-बड़े पंडित उनसे अपनी गुत्थियाँ सुलझवाने आते थे। उन्होंने कितनी ही ऐसी करामातें दिखाई थीं। जिनके कारण लोगों की उन पर अटूट श्रद्धा हो गई थी।

बरसोड़ा में एक ऋषिराज ने सात वर्ष तक निराहार रहकर गायत्री पुरश्चरण किए थे। उनकी वाणी सिद्ध थी। जो कह देते थे वही हो जाता था।

‘कल्याण’ के संत अंक में हरे राम नामक एक ब्रह्मचारी का जिक्र छपा है। यह ब्रह्मचारी गंगाजी के भीतर उठी हुई एक टेकरी पर रहते थे और गायत्री की आराधना करते थे। उनका ब्रह्मतेज अवर्णनीय था। सारा शरीर तेज से दमकता था। उन्होंने अपनी सिद्धियों से अनेकों के दुःख दूर किए थे।

देव प्रयाग के श्री विष्णुदत्त जी वानप्रस्थी ने चांद्रायण व्रतों के साथ सवा लक्ष जप के सात अनुष्ठान किए थे। इससे उनका आत्मबल बहुत बढ़ गया था। उन्हें कितनी ही सिद्धियाँ मिल गई थीं। लोगों को जब पता चला तो अपने कार्य सिद्ध कराने के लिए उनके पास दूर-दूर से भीड़ें आने लगीं। वानप्रस्थीजी इसी खेल में उलझ गए। रोज-रोज बहुत खर्च करने से उनका शक्ति भंडार चुक गया। पीछे उन्हें बड़ा पश्चात्ताप हुआ और फिर मृत्यु समय तक एकांत साधना करते रहे।

रुद्र प्रयाग के स्वामी निर्मलानंद संन्यासी को गायत्री-साधना से भगवती के दिव्य दर्शन और ईश्वर साक्षात्कार का लाभ प्राप्त हुआ था, इससे उन्हें असीम तृप्ति हुई।

बिटूर के पास खांडेराव नामक एक वयोवृद्ध तपस्वी एक विशाल खिरनी के पेड़ के नीचे गायत्री-साधना करते थे। एक बार उन्होंने विराट गायत्री यज्ञ और ब्रह्मभोज किया। दिनभर हजारों आदमियों की पंगतें होती रहीं। रात के नौ बजे भोजन समाप्त हो गया। भोजन भी कई हजार आदमियों को होना शेष था। पांडेरावजी को सूचना दी गई, उन्होंने आज्ञा दी, गंगाजी में से चार कनस्तर पानी भर लाओ और उससे पूड़ियाँ सिकने दो। ऐसा ही किया गया। पूड़ियाँ घी के समान ही स्वादिष्ट थीं, दूसरे दिन चार कनस्तर घी मँगवाकर गंगाजी में डलवा दिया।

दीनवा के स्वामी मनोहरदासजी ने गायत्री के कई पुरश्चरण किए हैं। उनका कहना है कि इस महा साधना से मुझे इतना अधिक लाभ हुआ है कि उसे प्रकट करने की उसी प्रकार इच्छा नहीं होती, जैसे कि लोभी को अपना धन प्रकट करने में संकोच होता है।

हटा के श्री रमेशचंद्र दुबे को गायत्री-साधना के कारण कई बार बड़े अनुभव हुए हैं, जिनके कारण उनकी निष्ठा में वृद्धि हुई है।

वृंदावन के काठिया बाबा, उड़िया बाबा, प्रज्ञाचक्षु स्वामी गंगेश्वरानंद जी, गायत्री उपासना से आरंभ करके अपनी साधना को आगे बढ़ाने में समर्थ हुए थे। वैष्णव संप्रदाय के प्रायः सभी आचार्य गायत्री की साधना पर बहुत जोर देते रहे हैं।

नवाब गंज के पं. बलभद्र ब्रह्मचारी, सहारनपुर जिले के श्री स्वामी देवदर्शनानंद जी, बुलंदशहर के परिव्राजक महात्मा योगानंद जी, ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी ब्रह्मपिदासजी उदासीन, बिहार प्रांत के महात्मा अनाशक्तजी, यज्ञाचार्य पं. जगन्नाथ शास्त्री, 'ॐ' राजगढ़ के महात्मा हरिॐ तत् सत् आदि कितने ही संत महात्मा गायत्री उपासना में पूर्ण मनोयोग के साथ संलग्न रहें। अनेक गृहस्थ भी तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए इस महान साधन में प्रवृत्त हुए, फलस्वरूप इस मार्ग पर चलते हुए उन्हें महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक सफलता प्राप्त हुई।

हमने स्वयं अपने जीवन के आरंभकाल से ही गायत्री की उपासना की है और वह हमारा जीवन-आधार ही बन गई है। दोषों, विकारों, कषाय-कल्मषों, कुविचारों और कुसंस्कारों को हटा देने में जो थोड़ी-सी सफलता मिली है, उसका श्रेय इसी को है। ब्राह्मणत्व की ब्राह्मी भावनाओं की, धर्मपरायणता की, सेवा, संयम, स्वाध्याय और तपश्चर्या की जो यत्किंचित् प्रवृत्तियाँ हैं, वे माता की कृपा के कारण ही हैं। अनेक बार विपत्तियों में उसने बचाया है और अंधकार में मार्ग दिखाया है। आप बीती ऐसी घटनाओं का वर्णन बहुत विस्तृत है जिनके कारण हमारी श्रद्धा दिन-दिन माता के चरणों में बढ़ती चली आई है। इन वर्णनों के लिए इन पंक्तियों में स्थान नहीं है। हमारे प्रयत्न और प्रोत्साहन से जिन सज्जनों ने वेदमाता की उपासना की है उनमें आत्मशुद्धि, पापों से घृणा, सन्मार्ग में श्रद्धा, सतो गुण की वृद्धि, संयम, पवित्रता, आस्तिकता, जागरूकता एवं धर्मपरायणता की प्रवृत्तियों को बढ़ते हुए पाया है। उन्हें अन्य सांसारिक लाभ चाहे हुए हों चाहे न हुए हों, पर यह

आत्मिक लाभ हर एक को निश्चित रूप में हुए हैं। और विवेकपूर्वक विचार किया जाए तो लाभ इतने महान हैं कि इनके ऊपर धन-संपत्ति की छोटी-मोटी सफलताओं को निछावर करके फेंका जा सकता है।

इसलिए हम अपने पाठकों से आग्रहपूर्वक अनुरोध करेंगे कि वे गायत्री की उपासना करके उसके द्वारा होने वाले लाभों का चमत्कार देखें। जो वेदमाता की शरण ग्रहण करते हैं, अंतःकरण में सतोगुण, विवेक, सद्विचार और सत्कर्मों की ओर असाधारण प्रवृत्ति जाग्रत होती है। यह आत्मजागरण लौकिक और पारलौकिक, सांसारिक और आत्मिक सभी प्रकार की सफलताओं का दाता है।



गायत्री-साधना से श्री, समृद्धि और सफलता

गायत्री त्रिगुणात्मक है उसकी उपासना से जहाँ सतोगुण बढ़ता है, वहाँ कल्याणकारक एवं उपयोगी रजोगुण की भी अभिवृद्धि होती है।

रजोगुणी आत्मबल बढ़ने से मनुष्य की वे गुप्त शक्तियाँ जाग्रत होती हैं, जो सांसारिक जीवन के संघर्ष में अनुकूल प्रतिक्रिया, दूरदर्शिता, तीव्र बुद्धि, अवसर की पहचान, वाणी में माधुर्य, व्यक्तित्व में आकर्षण, स्वभाव में मिलनसारी जैसी अनेक छोटी-बड़ी विशेषताएँ उत्पन्न तथा विकसित होती हैं, जिनके कारण वह 'श्री' तत्त्व का उपासक भीतर-ही-भीतर एक नए ढाँचे में ढलता रहता है, उनमें ऐसे परिवर्तन होते जाते हैं जिनके कारण साधारण व्यक्ति भी धनी एवं समृद्ध हो सकता है।

गायत्री उपासकों में ऐसी त्रुटियाँ जो मनुष्य को दुखी एवं दरिद्र बनाती हैं, नष्ट होकर वे विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं जिनके कारण मनुष्य क्रमशः समृद्धि, संपन्नता और उन्नति की ओर अग्रसर होता जाता है। गायत्री अपने साधकों की झोली में सोने की अशरफियों नहीं उड़ेलती यह ठीक है, पर यह भी ठीक है कि साधक में उन विशेषताओं को उत्पन्न करती है, जिनके कारण वह अभावग्रस्त और दीन-हीन नहीं रह सकता। इस प्रकार के अनेकों उदाहरण हमारी जानकारी में हैं। उनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं—

हरई जिला छिंदवाड़ा के पं० भूरेलाल जी ब्रह्मचारी लिखते हैं—“रोजी में उत्तरोत्तर वृद्धि होने के कारण मैं धनधान्य से परिपूर्ण हूँ। जिस कार्य में हाथ डालता हूँ उसी में सफलता मिलती है, अनेक तरह के संकटों का निवारण आप-ही-आप हो जाता है, इतना तो अनुभव मेरे खुद के गायत्री मंत्र जपने का है।”

झाँसी के पं० लक्ष्मीकांत झा व्याकरण, साहित्याचार्य लिखते हैं—“बचपन में ही मुझे गायत्री पर श्रद्धा हो गई थी और उसी समय से एक हजार मंत्रों का नित्य जप करता हूँ। इसी के प्रताप से मैंने साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न तथा वेदशास्त्री आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं तथा संस्कृत कॉलेज झाँसी का प्रिंसीपल बना। मैंने एक सेठ के १६ वर्षीय मरणासन्न पुत्र के प्राण गायत्री जप के प्रभाव से बचते हुए देखे हैं, जिससे मेरी श्रद्धा और भी दृढ़ हो गई है।”

वृंदावन के पं० तुलसीराम शर्मा लिखते हैं—“कुछ समय पहले श्री उड़िया बाबा की प्रेरणा से हाथरस निवासी लाला गणेशीलाल ने गंगा के किनारे कर्णवास में चौबीस लक्ष गायत्री का अनुष्ठान कराया था। उस समय से गणेशीलाल जी की आर्थिक दशा दिन-दिन ऊँची उठती गई और अब उनकी प्रतिष्ठा तथा संपन्नता तब से चौगुनी है।”

प्रतापगढ़ के पं० हरनारायण शर्मा लिखते हैं—“मेरे एक निकट संबंधी ने काशी में एक महात्मा से धनप्राप्ति का उपाय पूछा। महात्मा ने उपदेश किया कि प्रातःकाल चार बजे उठकर शौचादि से निवृत्त होकर स्नान-संध्या के बाद खड़े-खड़े नित्य एक हजार गायत्री का जप किया करो। उसने ऐसा ही किया, फलस्वरूप उनका आर्थिक संकट दूर हो गया।”

प्रयाग जिले के छितौना ग्राम निवासी पं० देवनारायण जी देवभाषा के असाधारण विद्वान ब्राह्मण रहते थे। वे अत्यंत निर्धन थे,

पर गायत्री-साधना में उनकी बड़ी तत्परता थी। एक बार नौ दिन उपवास करके उन्होंने नवाह्न पुरश्चरण किया। पुरश्चरण के अंतिम दिन अर्द्ध रात्रि को भगवती गायत्री ने बड़े दिव्य स्वरूप में उन्हें दर्शन दिया और कहा—“तुम्हारे इस घर में अमुक स्थान पर स्वर्ण मुद्राओं से भरा घड़ा रखा है, उसे निकालकर अपनी दरिद्रता दूर करो।” पंडित जी ने घड़ा निकाला और वे निर्धन से धनपति हो गए।

इंदौर निवासी पं० रक्षपाल जी ने बताया कि एक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ बहुत लड़ाई-झगड़ा करता रहता था। थोड़े दिन तक गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित जल पीने से उसका स्वभाव बदल गया और उन स्त्री-पुरुष में उत्तरोत्तर स्नेह बढ़ता गया।

बड़ौदा के वकील रामचंद्र कालीशंकर पाठक आरंभ में दस रुपये मासिक की एक छोटी-सी नौकरी करते थे। उस समय उन्होंने एक गायत्री पुरश्चरण किया, तब से उनकी रुचि विद्याध्ययन में लगी और धीरे-धीरे कानूनदां हो गए। तब उनकी आमदनी करीब पाँच सौ रुपये मासिक तक पहुँच गई।

महुवा, काठियावाड़ के श्री रणछोड़लाल भाई का कथन है कि एक मनुष्य का लड़का मैट्रिक में दो बार फेल हो चुका था। अंत में उसने दुखी होकर गायत्री का जप कराया, उस वर्ष उसका लड़का अच्छे नंबरों से पास हुआ।

गुजरात के मधुसूदन स्वामी का नाम संन्यास लेने से पहले माया शंकर दयाशंकर पंड्या था। वे सिद्धपुर रहते थे। आरंभ में वे पच्चीस रुपये मासिक के नौकर थे। उन्होंने हर रोज एक हजार गायत्री जप से आरंभ करके चार हजार तक बढ़ाया। फलस्वरूप उनकी पद-वृद्धि हुई व बड़ौदा राज्य रेलवे के असिस्टेंट ट्रेफिक सुपरिंटेंडेंट के औहदे तक पहुँचे और उनका वेतन तीन सौ रुपये मासिक तक हो गया। उत्तरावस्था में उन्होंने संन्यास ले लिया था।

मांडूक्योपनिषद् पर कारिका रचने वाले विद्वान श्री गौड़पद का जन्म उनके पिता के उपवास पूर्वक सात दिन तक गायत्री जप करने के फलस्वरूप हुआ था।

प्रसिद्ध साहित्यकार पं. द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी पहले इलाहाबाद में सिविल सर्जन के हैड क्लर्क थे। उन्होंने वारेन हेस्टिंग्स का जीवन चरित्र लिखा जो राजद्रोहात्मक समझा गया और उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ा। बड़ा कुटुंब और जीविका का साधन न रहना इस दोहरी विपत्ति से दुखी होकर उन्होंने गायत्री उपासना की। इस तपस्या के फलस्वरूप उन्हें पुस्तक-लेखन का स्वतंत्र कार्य मिल गया। तब से उन्होंने पर्याप्त साहित्यसेवा की और धनसंपन्न बने। उन्होंने प्रतिवर्ष गायत्री अनुष्ठान करने का अपना नियम बनाया और नित्य जप करते थे।

स्वर्गीय पं० बालकृष्ण जी भट्ट हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। वे नित्य गायत्री के पाँच सौ मंत्र जपते थे और कहा करते थे कि—“गायत्री जप करने वाले को कभी कोई कमी नहीं रहती।” भट्ट जी सदा विद्या, धन, जन से भरे-पूरे रहे।

प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर क्षेत्रेशचंद्र चट्टोपाध्याय का भानजा उनके यहाँ रहकर पढ़ता था। इंटर परीक्षा के दौरान में लौजिक के परचों के दिन वह बहुत दुखी था, क्योंकि उस विषय में वह बालक बहुत कच्चा था। प्रोफेसर साहब ने उसे प्रोत्साहन देकर परीक्षा देने भेजा और स्वयं छुट्टी लेकर आसन जमाकर गायत्री जपने लगे। जब तक बालक लौटा तब तक बराबर जप करते रहे। बालक ने बताया उसका वह परचा बहुत ही अच्छा हुआ है और लिखते समय उसे लगता था मानो उनकी कलम पकड़कर कोई लिखता चलता है। वह बहुत अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण हुआ।

इलाहाबाद के पं० प्रतापनारायण चतुर्वेदी की नौकरी छूट गई। बहुत तलाश करने पर भी जब कोई जगह न मिली, तो उन्होंने

अपने पिता के आदेशानुसार गायत्री का सवालक्ष जप किया। समाप्त होने पर उसी पानियर प्रेस में पहली नौकरी की अपेक्षा ढाई गुने वेतन की जगह मिल गई, जहाँ कि पहले उन्हें कितनी ही बार मना कर दिया गया था।

कलकत्ता (कोलकाता) के शा. मोड़कमल केजड़ावाल आरंभ में जोधपुर राज्य के एक गाँव में बारह रुपये मासिक के अध्यापक थे। एक छोटी पुस्तक से आकर्षित होकर उन्होंने गायत्री जपने का नित्य नियम बनाया। जप करते-करते अचानक उनके मन में स्फुरणा हुई कि मुझे कलकत्ते (कोलकाता) जाना चाहिए, वहाँ मेरी आर्थिक उन्नति होगी। अतः वे कलकत्ता (कोलकाता) पहुँचे। वहाँ व्यापारिक क्षेत्रों में वे नौकरी करते रहे और श्रद्धापूर्वक गायत्री-साधना करते रहे। रूई के व्यापार में उन्हें भारी लाभ हुआ और थोड़े ही दिन में लखपति बन गए।

बुलढाना के श्री बद्रीप्रसाद वर्मा बहुत निर्बल आर्थिक स्थिति के आदमी थे। पचास रुपये मासिक से उन्हें अपने आठ आदमियों के परिवार का गुजारा करना पड़ता था। कन्या विवाह योग्य हो गई। अच्छे घर में विवाह करने के लिए हजारों रुपया देहेज की आवश्यकता थी। वे दुखी रहते और गायत्री माता के चरणों में आँसू बहाते रहते। अचानक ऐसा संयोग हुआ कि एक डिप्टी कलक्टर के लड़के की बरात, कन्यापक्ष वालों से झगड़कर बिना ब्याहे वापस लौट रही थी। डिप्टी साहब, वर्माजी को खूब जानते थे। रास्ते में उनका गाँव पड़ता था। उन्होंने वर्माजी के पास प्रस्ताव भेजा कि अपनी कन्या का विवाह आज ही हमारे लड़के से कर दें। वर्माजी राजी हो गए। एम० ए० पास लड़का जो तब नहर विभाग में छह सौ रुपये मासिक का इंजीनियर था, उससे उनकी कन्या की शादी कुल एक सौ पचास रुपये में हो गई।

देहरादून का वसंतकुमार नामक छात्र एक वर्ष मैट्रिक में फेल हो चुका था दूसरे वर्ष भी पास होने की आशा न थी।

उसने गायत्री उपासना की और परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास हुआ।

संभलपुर के बा० कौशलकिशोर माहेश्वरी असवर्ण माता-पिता से उत्पन्न होने के कारण जाति बहिष्कृत थे। विवाह न होने के कारण उनका चित्त बड़ा दुखी रहता था। गायत्री माता से अपना दुःख रोकर चित्त हलका कर लेते थे। २६ वर्ष की आयु में उनकी शादी एक सुशिक्षित उच्च घराने की अत्यंत रूपवती तथा सर्वगुण संपन्न कन्या के साथ हुई। माहेश्वरी जी के अन्य भाई-बहनों की शादी भी उच्च तथा संपन्न परिवारों में हुई। जाति बहिष्कार के अपमान से उनका परिवार पूर्णतया मुक्त हो गया।

हृदयनाथ जिला मंडला के पं० शंभुप्रसाद मिश्र गायत्री के अनन्य भक्त थे। अपने से कई साधनसंपन्न विरोधी को परास्त करके वे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन चुने गए।

बहाबलपुर के राधावल्लभ तिवारी को विवाह से १६ वर्ष बीत जाने पर भी संतान नहीं हुई, तो उन्होंने गायत्री उपासना का आश्रय लिया। फलस्वरूप उन्हें एक कन्या और एक पुत्र की प्राप्ति हुई।

प्राचीनकाल में दशरथजी को गायत्री द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ करने पर और राजा दिलीप का गुरु वसिष्ठ के आश्रम में गायत्री उपासना करते हुए गौ दुग्ध का कल्प करने पर सुसंतति प्राप्त हुई थी। राजा अश्वपति ने गायत्री यज्ञ करके संतान पाई थी। कुंती ने बिना पुरुष के संयोग के गायत्री मंत्र द्वारा सूर्यशक्ति को आकर्षित करके कर्ण को उत्पन्न किया था।

दिल्ली में नई सड़क पर श्री बुद्धराम भट्ट नामक एक दुकानदार को ४५ वर्ष की आयु तक कोई संतान न हुई थी। गायत्री की उपासना से उस ढलती उम्र में उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ जो बड़ा ही सुंदर और होनहार दिखाई पड़ता था।

गुरुकुल वृंदावन के एक कार्यकर्त्ता सुदामा मिश्र के यहाँ १४ वर्ष से कोई बालक नहीं जन्मा था। गायत्री पुरश्चरण करने से उनके यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ और वंश चलने तथा घर के किवाड़ खुले रहने की उनकी चिंता दूर हो गई।

सरसई के जीवनलाल वर्मा का तीन वर्ष का होनहार बालक स्वर्गवासी हो गया। उनका घर बालक के विछोह में उद्विग्न था। उनने गायत्री की विशेष उपासना की। दूसरे मास उनकी पत्नी ने स्वप्न में देखा कि—“उनका बच्चा गोदी में चढ़ आया है और जैसे ही उसने उसे छाती से लगाना चाहा कि बालक उसके पेट में घुस गया है।” इस स्वप्न के ९ महीने बाद जो बालक जन्मा वह हर बात में उसी मरे हुए बालक की प्रतिमूर्ति था। इस बच्चे को पाकर उनका शोक पूर्णतः शांत हो गया।

बैजनाथ भाई रामजी भाई दुलारे ने कई बार विद्वानों के द्वारा गायत्री अनुष्ठान कराए। हर अनुष्ठान में उन्हें आश्चर्यजनक लाभ हुआ। छह कन्याओं के बाद उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। सत्रह साल बाद पुराना बवासीर अच्छा हुआ और व्यापार में इतना लाभ हुआ जितना कि इससे पहले उन्हें कभी भी नहीं हुआ था।

डोरी बाजार के पं० पूजा मिश्र का कथन है कि हमारे पिता पं० देवीप्रसाद जी एक गायत्री उपासक महात्मा के शिष्य थे। पिता जी की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। उनको दुखी देखकर महात्माजी ने उन्हें गायत्री उपासना बताई। फलस्वरूप खेती में भारी लाभ होने लगा। छोटी-सी खेती की विशुद्ध आमदनी से अब हमारी हालत बहुत अच्छी हो गई और बचत का २० हजार रुपया भी बैंक में जमा हो गया।

जबलपुर के राधेश्याम शर्मा के घर में आएदिन बीमारियाँ सताती थीं। उनकी आमदनी का एक बड़ा भाग वैद्य डॉक्टरों के घर में चला जाता था। जब से उनने गायत्री उपासना आरंभ की उनके घर से बीमारी पूर्णतः विदा हो गई।

सीकर के श्रीशिव भगवान जी सोमानी तपैदिक से सख्त बीमार पड़े थे। उनके साले मालेगाँव के शिवरतन जी मारु ने उन्हें गायत्री का मानसिक जप करने की सलाह दी, क्योंकि गायत्री उपासना से ही अपने पारिवारिक कलह तथा स्त्री की अस्वस्थता से छुटकारा प्राप्त कर चुके थे। सोमानी की बीमारी इतनी घातक हो चुकी थी कि डॉक्टर विलमोरिया जैसे सर्जन को कहना पड़ा कि पसली की तीन हड्डी निकलवा दी जाएँ, तो ठीक होने की संभावना है, अन्यथा पंद्रह दिन में हालत काबू से बाहर हो जाएगी। वैसी भयंकर स्थिति में सोमानीजी ने गायत्री माता का आँचल पकड़ा और पूर्ण स्वस्थ होकर अब वे रोहिनपुर में अपना अच्छा कारोबार कर रहे हैं।

श्री गोवर्द्धन पीठ के शंकराचार्य जी ने अपनी पुस्तक 'मंत्र शक्तियोग' के पृष्ठ १६७ पर लिखा है कि "राव साहब मागलतदार पहाड़पुर कोल्हापुर वाले गायत्री मंत्र से साँप के जहर को उतार देते थे।"

रोहेड़ा निवासी श्री नैनूराम को बीस वर्ष पुरानी वात-व्याधि थी और बड़ी-बड़ी दवाएँ करा लेने पर भी अच्छी न हुई थी। गायत्री उपासना द्वारा उनका रोग पूर्णतः अच्छा हो गया।

इस प्रकार के अगणित उदाहरण उपलब्ध हो सकते हैं जिनमें गायत्री उपासना द्वारा राजसी वैभव से साधक लाभान्वित हुए हैं।



गायत्री-साधना से आपत्तियों का निवारण

विपरीत परिस्थितियों का प्रवाह बड़ा प्रबल होता है। उसके थपेड़े में जो फँस गया, वह विपत्ति की ओर बहता ही जाता है। बीमारी, धन हानि, मृत्यु, मुकदमा, शत्रुता, बेकारी, गृह-कलह, विवाह, कारंज आदि की शृंखला जब चल पड़ती है, तो मनुष्य हैरान हो जाता है। कहावत है कि विपत्ति अकेली नहीं आती, वह हमेशा अपने बाल-बच्चे साथ लाती है। एक मुसीबत आने पर उसकी साथिन और भी कई कठिनाइयाँ भी साथ आती हैं, चारों ओर से घिरा हुआ मनुष्य अपने चक्रव्यूह में फँसा-सा अनुभव करता है। ऐसे विकट समय में जो लोग निराशा, चिंता, भय, निरुत्साह, घबराहट, किंकर्तव्यविमूढ़ता में पड़कर हाथ-पाँव चलाना छोड़ देते हैं, रोने-कलपने में लगे रहते हैं, वे अधिक समय तक और अधिक मात्रा में कष्ट भोगते हैं।

विपत्ति और विपरीत परिस्थितियों की धारा से त्राण पाने के लिए साहस, विवेक और प्रयत्न की आवश्यकता है। इस चार कोने वाली नाव पर चढ़कर ही संकट की नदी का पार करना सुगम होता है। गायत्री की साधना आपत्ति के समय इन चार तत्वों को मनुष्य के अंतःकरण में विशेष रूप से प्रोत्साहित करती है, जिससे वह ऐसा ठीक मार्ग खोजने में सफल हो जाता है जो उसे विपत्ति से पार लगा दे।

आपत्तियों में फँसे हुए अनेक व्यक्ति गायत्री की कृपा से किस प्रकार पार उतरे उनके कुछ उदाहरण जानकारी में इस प्रकार हैं—

घाटकोपर बंबई (मुंबई) के श्री आर० बी० वेद गायत्री की कृपा से घोर सांप्रदायिक दंगों के दिनों में मुसलिम बस्तियों में होकर निर्भय निकलते रहते थे। उनकी पुत्री को एक बार भयंकर हैजा हुआ वह भी उसी अनुग्रह से शांत हुआ। एक महत्त्वपूर्ण मुकदमा का उनकी अनुपस्थिति में भी अनुकूल फैसला हुआ।

इंदौर, कांगड़ा के चौ० अमरसिंह एक ऐसी जगह बीमार पड़े, जहाँ की जलवायु बड़ी खराब थी और वहाँ कोई चिकित्सक भी खोजने से न मिलता था। उस भयंकर बीमारी में गायत्री प्रार्थना को उन्होंने ओषधि बनाया और अच्छे हो गए।

बंबई (मुंबई) के पं० रामकरण शर्मा जब गायत्री अनुष्ठान कर रहे थे, उन्हीं दिनों उनके माता-पिता सख्त बीमार हुए, परंतु अनुष्ठान के प्रभाव से उनका बाल भी बाँका न हुआ, दोनों ही नीरोग हो गए।

इऔआधुरा के डॉ० रामनारायणजी भटनागर को उनकी स्वर्गीया पत्नी ने स्वप्न में दर्शन देकर गायत्री-जप करने की शिक्षा दी थी। तब से वे बराबर इस साधना को कर रहे हैं। चिकित्सा क्षेत्र में उनके हाथ में ऐसा यश आया कि बड़े-बड़े कष्टसाध्य रोगी उनकी चिकित्सा से अच्छे हो गए।

कनकुवा हमीरपुर के श्री लक्ष्मीनारायणजी श्रीवास्तव बी० ए० एल० एल० बी० की धर्मपत्नी प्रसवकाल में अत्यंत कष्ट-पीड़ित हुआ करती थीं। एक बार उनका लड़का मोतीझरा से पीड़ित हुआ, बेहोशी और चीखने की दशा को देखकर सब लोग बड़े दुखी थे। वकील साहब की गायत्री प्रार्थना के द्वारा बालक को गहरी नींद आ गई और वह थोड़े ही दिनों में स्वस्थ हो गया।

जफरापुर के ठा० रामकरणसिंह जी वैद्य की धर्मपत्नी को दो वर्ष से संग्रहणी की बीमारी थी। अनेक चिकित्साएँ कराने

पर भी जब लाभ न हुआ, तो सवा लक्ष जप का अनुष्ठान किया गया। फलस्वरूप वह पूर्ण स्वस्थ हो गई और उनके एक पुत्र भी पैदा हुआ।

कसराबाद, निमाड़ के श्रीशंकरलाल व्यास का बालक इतना बीमार था कि डॉक्टर-वैद्यों ने आशा छोड़ दी थी। दस हजार गायत्री जप के प्रभाव से वह अच्छा हुआ। एक बार व्यास जी रास्ता भूलकर रात के समय ऐसे पहाड़ी बीहड़ जंगल में फँस गए थे, जहाँ हिंसक जानवर चारों ओर शब्द करते हुए घूम रहे थे। इस संकट के समय में उन्होंने गायत्री का ध्यान किया और उनके प्राण बच गए।

विहिया, शाहाबाद के श्री गुरुचरण आर्य एक अभियोग में जेल भेजे गए। छुटकारे के लिए वे जेल में जप करते रहते, वे अचानक जेल से छूट गए और मुकदमे से निर्दोष बरी हुए।

मुद्रावजा के श्री प्रकाशनारायण मिश्र कक्षा १०वीं की पढ़ाई में पारिवारिक कठिनाइयों के कारण ध्यान न दे सके। परीक्षा के २५ दिन रह गए, तब उन्होंने पढ़ना और गायत्री का जप करना आरंभ किया। उत्तीर्ण होने की आशा न थी फिर भी उन्हें सफलता मिली। मिश्र जी के बाबा शत्रुओं के एक ऐसे कुचक्र में फँस गए थे कि जेल जाना पड़ता, लेकिन गायत्री अनुष्ठान के कारण वे उस आपत्ति से बच गए।

काशी के पं० धरणीदत्त शास्त्री का कथन है कि उनके दादा पं० कन्हैयालाल जी गायत्री के उपासक थे। बचपन में शास्त्री जी अपने दादा के साथ रात के समय कुएँ पर पानी लेने गए। उन्होंने देखा कि वहाँ एक भयंकर प्रेतात्मा है, जो कभी भैंसा बनकर कभी शूकर बनकर उन पर आक्रमण करना चाहता है, वह कभी मुख से कभी सिर से भयंकर अग्नि-ज्वालाएँ

फेंकता था और कभी मनुष्य, कभी हिंसक जंतु बनकर एक-डेढ़ घंटे तक वह भयोत्पादन करता रहा। दादा ने मुझे डरा हुआ देखकर समझा दिया कि बेटा, हम गायत्री उपासक हैं, यह प्रेत हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अंत में वह दोनों सकुशल घर आ गए। प्रेत का क्रोध असफल रहा।

‘सनाढ्य जीवन’ इटावा के संपादक पं० प्रभुदयाल शर्मा का कथन है कि उनकी पुत्रवधू तथा नातियों को कोई दुष्ट प्रेतात्मा लग गई थी। हाथ, पैर और मस्तक में भारी पीड़ा होती थी और बेहोशी आ जाती थी। रोगमुक्ति के जब सब प्रयत्न असफल हुए तो गायत्री का आश्रय लेने से वह बाधा दूर हुई। इसी प्रकार शर्मा जी का भतीजा भी मृत्यु के मुख में अटका था। उसे गोदी में लेकर गायत्री का जप किया गया, बालक अच्छा हो गया।

शर्मा जी के ताऊजी दानापुर (पटना) गए हुए थे। वहाँ वे स्नान के बाद गायत्री का जप कर रहे थे कि अचानक उनके कान में बड़े जोर का शब्द हुआ कि “जल्दी निकल, भाग, यह मकान अभी गिरता है।” वे खिड़की से कूद कर भागे। मुश्किल से चार-छह कदम गए होंगे कि मकान गिर पड़ा। वे बाल-बाल बच गए।

शेखूपुरा के अमोलचंद गुप्ता बचपन में ही पिता की और किशोरावस्था में ही माता की मृत्यु हो जाने पर कुसंग में पड़कर अनेक बुरी आदतों में फँस गए। दोस्तों की चौकड़ी दिनभर जमी रहती और ताश, शतरंज, गाना, बजाना, वेश्यागमन, सिगरेट, शराब, जुआ, व्यभिचार, नाच-तमाशा, सैर-सपाटा, भोजन, पार्टी आदि के दौर चलते रहते। इसी कुचक्र में पाँच वर्ष के भीतर नकदी, जेवर, मकान और बीस हजार की जायदाद स्वाहा हो गई। जब कुछ न रहा तो जुए के अड्डे, व्यभिचार की दलाली, चोरी, जेबकटी, लूट, धोखाधड़ी आदि की नई-नई तरकीबें निकालकर एक छोटे

गिरोह के साथ अपना गुजारा करने लगे। इस स्थिति में उनका चित्त बड़ा अशांत रहता। एक दिन एक महात्मा ने उन्हें गायत्री जप का उपदेश दिया, उनकी श्रद्धा जम गई। धीरे-धीरे उत्तम विचारों की वृद्धि हुई। पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त की भावना बढ़ने से उन्होंने कई चांद्रायण व्रत, तीर्थयात्रा, अनुष्ठान और प्रायश्चित्त किए। वे एक दुकान करके अपना गुजारा करने लगे और पुरानी बुरी आदतों से मुक्त हुए।

रानीपुरा के ठा० जंगजीत सिंह राठौर एक डकैती के केस में फँस गए थे। जेल में वे गायत्री जप करते रहते थे। मुकदमे में निर्दोष छुटकारा पाया।

अंबाला के मोतीलाल माहेश्वरी का लड़का कुसंग में पड़कर ऐसी बुरी आदतों का शिकार हो गया था, जिससे उनके प्रतिष्ठित परिवार पर कलंक के छींटे पड़ते थे। माहेश्वरी जी ने दुखी होकर गायत्री की शरण ली। उस तपश्चर्या के प्रभाव से लड़के की मति पलटी और अशांत परिवार में शांत वातावरण उत्पन्न हो गया।

टोंक के श्रीशिवनारायण श्रीवास्तव के पिताजी के मरने पर जमींदारी से दो हजार रुपया सालाना आमदनी पर गुजारा करने वाले १९ व्यक्ति रह गए। परिश्रम कोई कुछ न करता, पर खर्च सब बढ़ाते और जमींदारी से माँगते। अतः वह घर फूट और कलह का अखाड़ा बन गया। फौजदारी और मुकदमेबाजी के आसार खड़े हो गए। माहेश्वरी जी को इससे बड़ा दुःख होता क्योंकि वे पिताजी के उत्तराधिकारी गृहपति थे। दुखी होकर एक महात्मा के आदेशानुसार उन्होंने गायत्री जप आरंभ किया। परिस्थिति बदली, बुद्धियों में सुधार हुआ। कमाने लायक लोग नौकरी तथा व्यापार में लग गए। झगड़े शांत हुए। डगमगाता हुआ घर बिगड़ने से बच गया।

अमरावती के सोहनलाल मेहरोत्रा की स्त्री को भूत-व्याधा बनी रहती थी। बड़ा कष्ट था, हजारों रुपया खरच हो चुके थे। स्त्री दिन-दिन घुलती जाती थी। एक दिन महरोत्रा जी से स्वप्न में उनके पिताजी ने कहा—“बेटा! गायत्री का जप कर, सब विपत्ति दूर हो जाएगी।” दूसरे दिन से उन्होंने वैसा ही किया। फलस्वरूप भूत उपद्रव शांत हो गए और स्त्री नीरोग हो गई। उनकी बहन की ननद भी इसी उपाय से भूत-व्याधा से मुक्त हुई।

चाचीड़ा के डॉक्टर भगवानस्वरूप की स्त्री प्रेतव्याधा में मरणासन्न स्थिति तक पहुँच गई थी। उनकी प्राण-रक्षा भी एक गायत्री उपासक के प्रयत्न से हुई।

विझौली के बाबा उमाशंकर खरे के परिवार से गाँव के जाटों के साथ पुस्तैनी दुश्मनी थी। उस रंजिश के कारण कई बार खरे जी के यहाँ डकैतियाँ हो चुकी थीं और बड़े-बड़े नुकसान हुए थे। सदा ही जान-जोखिम का अंदेशा रहता था। खरे जी ने गायत्री भक्ति का मार्ग अपनाया। उनके मधुर व्यवहार ने अपने परिवार को शांत स्वभाव और गाँव को नरम बना लिया। फलस्वरूप पुराना बैर समाप्त होकर नई सद्भावना कायम हुई है। सब लोग बड़े प्रेम से रहने लगे हैं।

खडगपुर के श्री गोकुलचंद सक्सेना रेलवे के लोको दफ्तर में कर्मचारी थे। उनके दफ्तर के ऊँचे औहदे के कर्मचारी उनसे द्वेष करते थे और षड्यंत्र करके उनकी नौकरी छुड़ाना चाहते थे। उनके अनेकों हमले विफल हुए। सक्सेना जी का विश्वास है कि गायत्री उनकी रक्षा करती है और उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

बंबई (मुंबई) के श्री मानिकचंद पाचौटिया व्यापारिक घाटे के कारण काफी रुपये के कर्जदार हो गए थे। कर्ज चुकाने की कोई

व्यवस्था हो नहीं पाती थी कि सट्टे में और भी नुकसान हो गया, दिवालिया होकर अपनी प्रतिष्ठा खोने और भविष्य में दुखी जीवन बिताने के लक्षण स्पष्ट रूप से सामने थे। विपत्ति में अपनी सहायता के लिए उन्होंने गायत्री-अनुष्ठान कराया। समय कुछ ऐसा फिरा कि दिन-दिन लाभ होने लगा। रूई और चाँदी के कई चान्स अच्छे आ गए, जिनमें सारा कर्ज चुक गया, गिरा हुआ व्यापार फिर चमकने लगा।

दिल्ली के प्रसिद्ध पहलवान गोपाल विश्नोई कोई बड़ी कुश्ती लड़ने जाते थे, तो पहले गायत्री पुरश्चरण कराते थे। वह प्रायः सदा ही विजयी होकर लौटते थे।

बाँसवाड़ा के श्री सीताराम मालवीय को क्षय रोग हो गया था। एक्सरा होने पर डॉक्टरों ने उनके फेफड़े खराब हो गए बताए थे। दशा निराशाजनक थी। सैकड़ों रुपये की दवाएँ खा लेने पर भी जब कुछ आराम न हुआ तो एक विद्वान वयोवृद्ध के आदेशानुसार उन्होंने चारपाई पर पड़े-पड़े गायत्री का जप आरंभ कर दिया और मन-ही-मन प्रतिज्ञा की कि यदि मैं बच गया तो अपना जीवन देशहित में लगा दूँगा। प्रभु की कृपा से वे बच गए। धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधरा और बिलकुल भले-चंगे हो गए। तब से वे आदिवासियों, भीलों तथा पिछड़ी हुई जातियों के लोगों की सेवा में लग गए।

थरपारकर के लाला करनदास का लड़का बहुत ही दुर्बल, पतला और कमजोर था, आएदिन बीमार पड़ा रहता था। आयु १९ वर्ष की हो चुकी थी, पर देखने में १३ वर्ष से अधिक न मालूम पड़ता था। लड़के को उनके कुलगुरु ने गायत्री की उपासना का उपदेश दिया। उसका मन इस ओर लग गया। एक-एक करके उसकी बीमारियाँ छूट गईं। कसरत करने

लगा, खाना भी हजम होने लगा। दो-तीन वर्ष में उसका शरीर ड्यौढ़ा हो गया और घर का सब काम-काज होशियारी के साथ सँभालने लगा।

श्रीनारायणदास कश्यप राजनाँद गाँव वालों के एक बड़े भाई पर कुछ लोगों ने मिलकर एक फौजदारी मुकदमा चलाया। वह भारी मुकदमा ४ वर्ष तक चला। इस प्रकार उनके छोटे भाई पर कत्ल करने का अभियोग भी लगाया गया। इन लोगों ने गायत्री माता का आँचल पकड़ा और दोनों मुकदमों में से उन्हें निर्दोष छुटकारा मिला।

स्वामी योगानंद जी संन्यासी को कुछ म्लेच्छ अकारण बहुत सताते थे। उन्हें गायत्री का आग्नेयास्त्र सिद्ध था। उसका प्रयोग उन्होंने उन म्लेच्छों पर किया तो उनके शरीर ऐसे जलने लगे मानो किसी ने अग्नि लगा दी है। वे मरणतुल्य कष्ट से छटपटाने लगे। तब लोगों की प्रार्थना पर स्वामी जी ने उस अंतर्दाह को शांत किया, इसके बाद वे सदा के लिए सीधे हो गए।

चंदनपुरवा के सत्यनारायण जी एक अच्छे गायत्री उपासक हैं। इन्हें अकारण सताने वाले गुंडों पर ऐसा वज्रपात हुआ कि एक भाई २४ घंटे के अंदर हैजे से मर गया और शेष भाइयों को पुलिस डकैती के अभियोग में पकड़ ले गई। उनको पाँच-पाँच वर्ष की जेल काटनी पड़ी।

इस प्रकार ऐसे अनेक प्रमाण मौजूद हैं, जिनमें यह प्रकट होता है कि गायत्री माता का आँचल श्रद्धापूर्वक पकड़ने से मनुष्य अनेक प्रकार की आपत्तियों से सहज ही छुटकारा पा सकता है। अनिवार्य कर्म, भोगों एवं कठोर प्रारब्ध में भी कई बार आश्चर्यजनक सुधार होते देखे गए हैं।

गायत्री उपासना का मूल लाभ आत्मशांति है। इस महामंत्र के प्रभाव से आत्मा में सतोगुण बढ़ता है और अनेक प्रकार की आत्मिक समृद्धियाँ बढ़ती हैं, साथ ही अनेक प्रकार के सांसारिक लाभ भी मिल जाते हैं, जिन्हें उपासना का गौण लाभ समझा जाता है।



देवियों की गायत्री-साधना

प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, अनुसूया, अरुंधती, देवयानी, अहिल्या, कुंती, सतरूपा, वृन्दा, मंदोदरी, तारा, द्रौपदी, दमयंती, गौतमी, अपाला, सुलभा, शावती, उशिजा, सावित्री, लोपामुद्रा, प्रतिशेयी, वैशालिनी, बेहुला, सुनीति, शकुंतला, शर्मिष्ठा, सीता, देवहुति, पार्वती, अदिति, शची, सत्यवती, सुकन्या, शैव्या आदि महासतियाँ वेदज्ञ और गायत्री की उपासक रहीं हैं। उन्होंने गायत्री शक्ति की उपासना द्वारा अपनी आत्मा को समुन्नत बनाया था और योगिक सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। उन्होंने सधवा और गृहस्थ रहकर सावित्री की आराधना की और सफलता प्राप्त की थी। इन देवियों का विस्तृत विवरण देना, उनकी साधनाओं और सिद्धियों का दर्शन कराना इस छोटी-सी पुस्तक में संभव नहीं है। जिन्होंने भारतीय पुराण, इतिहासों को पढ़ा है, वे जानते हैं कि उपर्युक्त देवियाँ विद्वत्ता, साहस, शक्ति, शौर्य, दूरदर्शिता, नीति, धर्म, साधना, आत्मोन्नति आदि पराक्रमों में अपने ढंग की अनोखी जाज्वल्यमान तारिकाएँ थीं। उन्होंने समय-समय पर ऐसे चमत्कार उपस्थित किए हैं, जिन्हें देखकर आश्चर्य में रह जाना पड़ता है।

प्राचीनकाल में सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री तप करके वह शक्ति प्राप्त की थी, जिससे वह अपने मृत पति सत्यवान के प्राणों को यमराज से लौटा सकी। दमयंती का तप ही था जिसके कारण कुचेष्टा करने का प्रयत्न करने वाले व्याघ्र को भस्म कर दिया था। गांधारी आँखों से पट्टी बाँधकर ऐसा तप करती थी जिससे उसके नेत्रों में वह शक्ति उत्पन्न हो गई थी कि उसके दृष्टिपात मात्र से दुर्योधन का शरीर अभेद्य हो गया था। जिस

जंघा पर उसने लज्जावश कपड़ा डाल लिया था, वही कच्ची रह गई थी और उसी पर प्रहार करके भीम ने दुर्योधन को मारा था। अनुसूया के तप ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को नन्हें बालक बना लिया था। सती शांडली के तपोबल ने सूर्य का रथ रोक दिया था। सुकन्या की तपस्या से जीर्ण-शीर्ण च्यवन ऋषि तरुण हो गए थे। स्त्रियों की तपश्चर्या का इतिहास पुरुषों से कम शानदार नहीं है। यह स्पष्ट है कि स्त्री और पुरुष सभी के लिए तप का प्रमुख मार्ग गायत्री ही है।

वर्तमान समय में भी अनेक नारियों की गायत्री-साधना का हमें भलीभाँति परिचय है और यह भी पता है कि इसके द्वारा उन्होंने कितनी बड़ी मात्रा में आत्मिक और सांसारिक सुख-शांति प्राप्त की है।

एक सुप्रसिद्ध इंजीनियर की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेम प्यारी देवी को अनेक प्रकार की पारिवारिक कठिनाइयों में होकर गुजरना पड़ा, उनने अनेक संकटों के समय गायत्री का आश्रय लिया और विषम स्थितियों से छुटकारा पाया।

दिल्ली के एक अत्यंत उच्च परिवार की सुशिक्षित देवी श्रीमती चंद्रकांता जेरथ बी० ए० गायत्री की अनन्य साधिका हुई हैं। उन्हें इस साधना द्वारा बीमारों की पीड़ा दूर कर लेने में सफलता मिलने लगी। दरद से बेचैन रोगी इनके अभिमंत्रित हस्त-स्पर्श से आराम अनुभव करने लगता। ये गायत्री उपासना में इतनी तन्मयता हो जाती कि सोते हुए भी जप अपने आप चलता रहता।

नागीना के एक प्रतिष्ठित शिक्षाशास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती मेधावती देवी को बचपन में गायत्री-साधना के लिए अपने पिताजी से प्रोत्साहन मिला था तब से अब तक वे इस साधना को बड़े प्रेमपूर्वक चला रही हैं। कई चिंताजनक अवसरों पर गायत्री की कृपा से उनकी मनोकामना पूर्ण हुई है।

शिलोंग की एक सती-साध्वी देवी श्रीमती गुणवंती देवी के पतिदेव की मृत्यु २० वर्ष की आयु में हो गई थी। गोदी में डेढ़ वर्ष का पुत्र था। उनको तथा उनके श्वसुर को इस मृत्यु का भारी आघात लगा और दोनों ही शोक से पीड़ित होकर अस्थिपंजर मात्र रह गए। एक दिन एक ज्ञानी ने उनके श्वसुर को गायत्री जप का उपदेश दिया। शोक निवारणार्थ वे उस जप को करने लगे। कुछ दिन बाद गुणवंती देवी को स्वप्न में एक तपस्विनी ने दर्शन दिए और कहा—“किसी प्रकार की चिंता न करो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी, मेरा नाम गायत्री है, कभी आवश्यकता हुआ करे तो मेरा स्मरण किया करो।” स्वप्न टूटने पर दूसरे ही दिन से उन्होंने गायत्री-साधना आरंभ कर दी। इससे उनकी समस्याओं का समाधान हो गया। परिवार का क्रम ठीक प्रकार चलता रहा। गायत्री पर उन्हें अनन्य श्रद्धा रही।

हैदराबाद (सिंध) की श्रीमती विमलादेवी की सास बड़ी कर्कश स्वभाव की थीं और पतिदेव शराब, वेश्यागमन आदि बुरी लतों में डूबे रहते थे। बेचारी देवी को आएँदिन सास तथा पति की गाली-गलौज तथा मारपीट का सामना करना पड़ता था। इससे वह बड़ी दुखी रहती और कभी-कभी आत्महत्या की बात सोचती। विमला की बुआ ने उसे विपत्तिनिवारिणी गायत्री माता की उपासना करने की शिक्षा दी। वह करने लगीं। फल आशातीत हुआ। थोड़े ही दिनों में सास और पति का स्वभाव आश्चर्यजनक रूप में बदल गया। एक दिन पति को बड़ा भयंकर स्वप्न हुआ कि उसके कुकर्मों के लिए कोई देवदूत उसे मृत्युतुल्य कष्ट दे रहे हैं। जब स्वप्न टूटा, तो उस भय का आतंक कई महीने उन पर रहा और उसी दिन से स्वभाव सीधा हो गया था। अब वह परिवार पूर्ण प्रसन्न और संतुष्ट रहने लगा। विमला का सुदृढ़ विश्वास रहा कि उसके घर को आनंदमय बनाने वाली गायत्री ही है। उनका जप बिना भोजन नहीं करने का नियम जीवन पर्यंत चलता रहा।

बनवारीलाल (बंगाल) के उच्च अफसर की धर्मपत्नी श्रीमती हेमलता चटर्जी को तैंतीस वर्ष की आयु तक कोई संतान न हुई, उनके पतिदेव तथा घर के अन्य व्यक्ति इससे बड़े दुखी रहते थे और कभी-कभी उनके पति का दूसरा विवाह होने की चर्चा होती थी। हेमलता को सबसे अधिक मानसिक कष्ट रहता था और उन्हें मूर्च्छा का रोग हो गया था। किसी साधक ने उन्हें गायत्री-साधना की विधि बताई। वे श्रद्धापूर्वक उपासना करने लगीं। ईश्वर की कृपा से एक वर्ष बाद एक तथा दो-दो वर्षों के अंतर से दो पुत्र हुए। इस परिवार में गायत्री की बड़ी मान्यता है।

जैसलमेर की श्रीमती गोगन बाई के १६ वर्ष की आयु से हिस्टीरिया (मृगी) के दौर आते थे। आठ वर्षों से वे इस रोग से बहुत दुखी थीं। उन्हें उपवासपूर्वक गायत्री जप करने की विधि बताई गई। अन्न त्यागकर वे फल और दूध पर निर्वाह करने लगीं और भक्तिपूर्वक गायत्री की आराधना करने लगीं। चार मास के भीतर उनका आठ वर्ष पुराना मृगी का रोग दूर हो गया।

गुजरानवाला की सुंदरी बाई को पहले कंठमाला रोग था, वह थोड़ा अच्छा हुआ तो प्रदर रोग भयंकर रूप से हो गया। हर घड़ी लाल, पीला पानी बहता रहता था। कई साल इस प्रकार बीमार पड़े रहने के कारण उनका शरीर अस्थि मात्र रह गया था। चमड़ी और हड्डियों के बीच मांस का नाम भी दिखाई नहीं पड़ता था, आँखें गड्ढे में धँस गई थीं, घर के लोग उनकी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे थे। ऐसी स्थिति में उन्हें एक पड़ोसिन ब्राह्मणी ने बताया कि गायत्री माता तरण-तारिणी हैं, उनका ध्यान करो। सुंदरी बाई के मन में बात जँच गई। वे चारपाई पर पड़े-पड़े जप करने लगीं। ईश्वर की कृपा से वे धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगीं। आठ मास में वे बिलकुल नीरोग हो गईं। दो वर्ष बाद उनके पुत्र उत्पन्न हुआ जो भला-चंगा और स्वस्थ है।

गोदावरी जिले की वसंती देवी को भूतोन्माद था। भूत-प्रेत उनके सिर पर चढ़े रहते थे। १२ वर्ष की आयु में वे बिलकुल बुढ़िया हो गई थीं। उनके पिता इस व्याधि से अपनी पुत्री को छुटकारा दिलाने के लिए काफी खर्च और परेशानी उठा चुके थे, पर कोई लाभ नहीं होता था। अंत में उन्होंने गायत्री पुरश्चरण कराया और उससे लड़की की व्याधि दूर हो गई।

भार्थू के डॉक्टर राजाराम शर्मा की पुत्री सावित्री देवी गायत्री उपासक हैं। उसने देहात में रहकर आयुर्वेद का उच्च अध्ययन किया और परीक्षा के दिनों में बीमार हो जाने पर भी आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई।

कानपुर के पं० अयोध्याप्रसाद दीक्षित की धर्मपत्नी शांतिदेवी मिडिल पास थीं। ११ वर्ष तक पढ़ाई छोड़कर परिवार के झंझटों में लगी रहीं। एक वर्ष अचानक उन्होंने मैट्रिक का फार्म भर दिया और गायत्री उपासना के बल पर थोड़ी-सी ही तैयारी में उत्तीर्ण हो गईं।

बालापुर की सावित्री देवी दुबे नामक एक महिला के पति की मृत्यु अठारह साल की आयु में ही हो गई थी। वे अत्यधिक शोकग्रस्त रहती थीं। सूख-सूख कर काँटा हो गई थीं। एक दिन उनके पति ने स्वप्न में उनसे कहा कि तुम गायत्री उपासना किया करो, जिससे मेरी आत्मा को सद्गति मिलेगी और तुम्हारा वैधव्य परम शांतिपूर्वक व्यतीत हो जाएगा। उनने पति की आज्ञानुसार वैसा ही किया। अपने परिवार में रहते हुए भी उच्चकोटि के महात्मा जैसी स्थिति प्राप्त हुई। वह जो बात अपनी जबान से कह देतीं थीं वह सत्य होती रहती थी।

कटक जिले के रामपुर ग्राम में एक लोहार की कन्या सोनी बाई को स्वप्न में नित्य और जाग्रत अवस्था में कभी-कभी गायत्री के दर्शन होते थे। वह ऐसी भविष्यवाणियाँ करती, जो प्रायः ठीक ही उतरती थी।

मुरीदपुर की संतोषकुमारी बचपन में बड़ी मंदबुद्धि थीं। उनके पिता ने उनको पढ़ाने के लिए बहुत प्रयत्न किए, पर सफलता न मिली। भाग्य दोष समझकर सब लोग चुप हो गए, विवाह हुआ। विवाह के चार वर्ष बाद ही वह विधवा हो गई। वैधव्य को काटने के लिए उसने गायत्री की आराधना आरंभ की। एक रात को स्वप्न में गायत्री ने दर्शन दिए और कहा कि तेरी बुद्धि तीक्ष्ण कर दी है, विद्या पढ़ तेरा जीवन सफल हो जाएगा। दूसरे दिन से उसे पढ़ने में बड़ा उत्साह आया, बुद्धि बड़ी तीव्र हो गई। कुछ ही वर्षों में मैट्रिक कर लिया और अब वे शिक्षा के प्रचार में बड़ी तत्परता से लगी रहीं।

रंगपुर, बंगाल की श्रीमती सरला चौधरी के कई बच्चे हो चुके थे। एक भी बच्चा जीवित न रहने से वे बहुत दुखी रहती थीं। एक बार उन्होंने गायत्री की प्रशंसा सुनी और उसे अपनाकर साधना करने लगीं। तब से उन्हें चार पुत्र और हुए जो सभी सुखपूर्वक हो गए।

मुलतान की सुंदरी बाई स्वयं बहुत कमजोर थीं उनके बच्चे भी कमजोर थे और उनमें से कोई-न-कोई बीमार पड़ा रहता था, अपनी दुर्बलता और बच्चों की बीमारी से रोना-धोना उन्हें बड़ा कष्टकर होता था। इस विपत्ति से उन्हें गायत्री ने ही छुड़ाया। पीछे वे सपरिवार स्वस्थ रहने लगीं।

उदयपुर की एक मारवाड़ी महिला ज्ञानवती रंग रूप की अधिक सुंदर न होने के कारण पति को प्रिय न थी। पति का व्यवहार उनसे सदा रूखा, कर्कश, उपेक्षापूर्ण रहता था और पास रहते हुए भी परदेश के समान दोनों में विलगाव रहता था। ज्ञानवती की मौसी जी ने गायत्री का पूजन और रविवार का व्रत रखने का उपाय बताया। वह तपश्चर्या निरर्थक नहीं गई। साधिका को आगे चलकर पति का प्रेम प्राप्त हुआ और उनका दांपत्य जीवन सुखमय बीता।

भीलवाड़ा प्रांत में एक सरमणी नामक स्त्री बड़ी ही तांत्रिक थी। उसे वहाँ के लोग डाकिन समझते थे। एक वयस्क संन्यासी ने उसे गायत्री की दीक्षा दी। तब से उसने सब प्रकार भगवान की भक्ति में चित्त लगाया और साधु जीवन व्यतीत करने लगी।

बहरामपुर के पास एक कुमारी कन्या गुफा बनाकर अल्पायु से ही तपस्या में निरत, चेहरे का तेज ऐसा कि आँखें चौंध जाती थी। उसके दर्शनों के लिए दूर-दूर से लोग आते रहते थे। वह देवी सदा ही अपने इष्ट गायत्री का जप करती रहती थी।

मीराबाई, सहजोबाई, रंतिबाई, लीलावती, दयावती, अहिल्याबाई, ससूबाई, मुक्ताबाई, प्रभृति अनेक ईश्वरभक्त वैरागिनी हुई हैं, जिनका जीवन विरक्त और परमार्थपूर्ण रहा है। इनमें से कइयों ने गायत्री की उपासना करके अपने भक्ति-पथ और वैराग्य को बढ़ाया है।

इस प्रकार अनेकों देवियाँ इस श्रेष्ठ साधना से अपनी आध्यात्मिक उन्नति करती आई हैं और सांसारिक सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं आपत्तियों से छुटकारा पाने की प्रसन्नता का अनुभव कर रही हैं। विधवा बहनों के लिए तो गायत्री-साधना एक सर्वोत्तम तपश्चर्या है। इससे उनके मानसिक विकार शांत होते हैं, इंद्रियों का शमन होता है, शोक-वियोग की जलन बुझती है, बुद्धि में सात्त्विकता आती है, चित्त ईश्वर की ओर लगता है। नम्रता, सेवा, शील, सदाचार, निरालस्यता, सादगी, धर्मरुचि, स्वाध्यायप्रियता, आस्तिकता एवं परमार्थपरायणता के तत्त्व बढ़ते हैं। गायत्री-साधना की तपश्चर्या का आश्रय लेकर अनेक ऐसी बाल विधवाओं ने अपना जीवन सती-साध्वी जैसा बिताया है, जिनकी कम आयु को देखकर अनेक आशंकाएँ की जाती थीं। जब ऐसी बहनों को गायत्री में तन्मयता आने लगती है, तो वे वैधव्य दुःख को भूल जाती

हैं और अपने को तपस्विनी, साध्वी, ब्रह्मवादिनी, उज्ज्वल चरित्र, पवित्र आत्मा अनुभव करती हैं। ब्रह्मचर्य तो उनका जीवन सहचर बनकर रहता है।

स्त्री और पुरुष, नर और नारी दोनों ही वर्ग, वेदमाता गायत्री के कन्या पुत्र हैं। दोनों ही उनकी आँखों के दो तारे हैं। किसी से भेद-भाव नहीं करतीं। वेदमाता गायत्री की साधना पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के लिए अधिक सरल और अधिक शीघ्र फलदायिनी है।



जीवन का कायाकल्प

गायत्री मंत्र से आत्मिक कायाकल्प हो जाता है। इस महामंत्र की उपासना आरंभ करते ही साधक को ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे आंतरिक क्षेत्र में एक नई हलचल एवं रद्दोबदल आरंभ हो गई है। सतोगुणी तत्त्वों की अभिवृद्धि होने से दुर्गुण, कुविचार, दुःस्वभाव एवं दुर्भाव घटने आरंभ हो जाते हैं और संयम, नम्रता, पवित्रता, उत्साह, स्फूर्ति, श्रमशीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, संतोष, शांति, सेवाभाव, आत्मीयता आदि सद्गुणों की मात्रा दिन-दिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है। फलस्वरूप लोग उसके स्वभाव एवं आचरण से संतुष्ट होकर बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता, श्रद्धा एवं सम्मान के भाव रखते हैं और समय-समय पर उसकी अनेक प्रकार से सहायता करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त सद्गुण स्वयं इतने मधुर होते हैं कि जिस हृदय में इनका निवास होगा, वहाँ आत्मसंतोष की परम शांतिदायक शीतल निर्झरिणी सदा बहती रहती है।

गायत्री-साधना से साधक के मनःक्षेत्र में असाधारण परिवर्तन हो जाता है। विवेक, दूरदर्शिता, तत्त्वज्ञान और ऋतंभरा बुद्धि की अभिवृद्धि हो जाने के कारण अनेक अज्ञानजन्य दुःखों का निवारण हो जाता है। प्रारब्धवश अनिवार्य कर्मफल के कारण कष्टसाध्य परिस्थितियाँ हर एक के जीवन में आती रहती हैं। हानि, शोक, वियोग, आपत्ति, रोग, आक्रमण, विरोध, आघात आदि की विभिन्न परिस्थितियों में जहाँ साधारण मनोभूमि के लोग मृत्युतुल्य कष्ट पाते हैं, वहाँ आत्मबलसंपन्न गायत्रीसाधक अपने विवेक, ज्ञान, वैराग्य, साहस, आशा, धैर्य, संतोष, संयम और ईश्वर-विश्वास के आधार पर इन कठिनाइयों को हँसते-हँसते आसानी से काट

लेता है। बुरी अथवा साधारण परिस्थितियों में भी अपने आनंद का मार्ग खोज निकालता है और मस्ती एवं प्रसन्नता का जीवन बिताता है।

संसार का सबसे बड़ा लाभ 'आत्मबल' गायत्रीसाधक को प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के सांसारिक लाभ भी होते देखे गए हैं। बीमारी, कमजोरी, बेकारी, घाटा, गृह-कलह, मनोमालिन्य, मुकदमा, शत्रुओं का आक्रमण, दांपत्य सुख का अभाव, मस्तिष्क की निर्बलता, चित्त की अस्थिरता, संतान-दुःख, कन्या के विवाह की कठिनाई, बुरे भविष्य की आशंका, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का भय, बुरी आदतों के बंधन आदि कठिनाइयों में ग्रसित अगणित व्यक्तियों ने गायत्री आराधना करके अपने दुःखों से छुटकारा पाया है।

कारण यह है कि हर एक कठिनाई के पीछे, जड़ में निश्चय ही कुछ-न-कुछ अपनी त्रुटियाँ, अयोग्यताएँ एवं खराबियाँ होती हैं। सतो गुण की वृद्धि के साथ अपने आहार-विहार, विचार, दिनचर्या, दृष्टिकोण, स्वभाव एवं कार्यक्रम में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन ही आपत्तियों के निवारण का, सुख-शांति की स्थापना का राजमार्ग बन जाता है। कई बार हमारी इच्छाएँ, तृष्णाएँ, लालसाएँ, कामनाएँ ऐसी होती हैं, जो अपनी योग्यता एवं परिस्थितियों से मेल नहीं खातीं, मस्तिष्क शुद्ध होने पर बुद्धिमान व्यक्ति उन मृग तृष्णाओं को त्यागकर अकारण दुखी रहने व भ्रम-जंजाल से छूट जाता है। अवश्यंभावी न टलने वाले प्रारब्ध का भोग जब सामने आता है, तो साधारण व्यक्ति बुरी तरह रोते-चिल्लाते हैं, किंतु गायत्रीसाधक में इतना आत्मबल एवं साहस बढ़ जाता है कि वह उन्हें हँसते-हँसते झेल लेता है।

किसी विशेष आपत्ति का निवारण करने एवं किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए भी गायत्री की उपासना की जाती है। बहुधा

इसका परिणाम बड़ा ही आशाजनक होता है। देखा गया है कि जहाँ चारों ओर निराशा, असफलता, आशंका और भय का अंधकार-ही-अंधकार छाया हुआ था, वहाँ वेदमाता की कृपा से एक दैवी प्रकाश उत्पन्न हुआ और निराशा आशा में परिणत हो गई, बड़े कष्टसाध्य कार्य तिनके की तरह सुगम हो गए। ऐसे अनेकों अवसर अपनी आँखों के सामने देखने के कारण हमारा यह अटूट विश्वास हो गया है कि कभी किसी की गायत्री-साधना निष्फल नहीं जाती।

गायत्री-साधना आत्मबल बढ़ाने का एक अचूक आध्यात्मिक व्यायाम है। किसी को कुश्ती में पछाड़ने एवं दंगल में जीतकर इनाम पाने के लिए कितने लोग पहलवानी और व्यायाम का अभ्यास करते हैं। यदि कदाचित् कोई अभ्यासी किसी कुश्ती को हार जाए तो भी ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उसका प्रयत्न निष्फल गया। इसी बहाने उसका शरीर तो मजबूत हो गया, वह जीवन भर अनेक प्रकार से अनेक अवसरों पर बड़े-बड़े लाभ उपस्थित करता रहेगा। निरोगिता, सौंदर्य, दीर्घ जीवन, कठोर परिश्रम करने की क्षमता, दांपत्य-सुख, सुसंतति, अधिक कमाना, शत्रुओं से निर्भयता आदि कितने ही लाभ ऐसे हैं, जो कुश्ती पछाड़ने से कम महत्वपूर्ण नहीं। साधना से यदि कोई विशेष प्रयोजन प्रारब्धवश पूरा भी न हो तो भी इतना तो निश्चय है कि किसी-न-किसी प्रकार साधना की अपेक्षा कई गुना लाभ अवश्य मिलकर रहेगा।

आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का केंद्र है। जो शक्तियाँ परमात्मा में हैं, वे ही उसके अमर युवराज आत्मा में हैं। समस्त ऋद्धि-सिद्धियों का केंद्र आत्मा में है परंतु जिस प्रकार राख से ढका हुआ अंगार मंद हो जाता है वैसे ही आंतरिक मलिनताओं के कारण आत्मतेज कुंठित हो जाता है। गायत्री-साधना से वह मलिनता का परदा हटता है और राख हटा देने से जैसे अंगार अपने प्रज्वलित स्वरूप में दिखाई पड़ने लगता है वैसे ही साधक की आत्मा भी अपने ऋद्धि-सिद्धि समन्वित ब्रह्मतेज के साथ प्रकट होती है।

योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्टसाध्य तपस्याएँ करने से प्राप्त होता है, वही लाभ गायत्रीसाधकों को स्वल्प प्रयास से प्राप्त हो जाता है।

प्राचीनकाल में महर्षियों ने बड़ी-बड़ी तपस्याएँ और योग-साधनाएँ करके अणिमा, महिमा आदि ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। उनकी चमत्कारी शक्तियों के वर्णन से इतिहास पुराण भरे पड़े हैं, वह तपस्या और योग-साधना गायत्री के आधार पर ही की थीं। अब भी अनेकों महात्मा ऐसे मौजूद हैं जिनके पास दैवी शक्तियों एवं सिद्धियों का भंडार है। उनका कथन है कि गायत्री से बढ़कर योग-मार्ग में सुगमतापूर्वक सफलता प्राप्त करने का दूसरा मार्ग नहीं है। सिद्धपुरुषों के अतिरिक्त सूर्यवंशी और चंद्रवंशी सभी चक्रवर्ती राजा गायत्री के उपासक रहे हैं। ब्राह्मण लोग गायत्री की ब्रह्मशक्ति के बल पर जगद्गुरु थे, क्षत्रिय गायत्री के मर्म तेज को धारण करके चक्रवर्ती शासक थे।

यह सनातन सत्य आज भी वैसा ही है। गायत्री माता का आंचल श्रद्धापूर्वक पकड़ने वाला मनुष्य कभी भी निराश नहीं रहता।

